कार्यक्रम

हवन यज्ञ
प्रातः 8:00 बजे से 9:00 बजे तक

सांस्कृतिक कार्यक्रम
(भजन-कीर्तन)

9:00 बजे से 10:30 बजे तक

प्रदर्शनी अवलोकन
10:30 बजे से 10:45 बजे तक

ठाकुर रामसिंह प्रतिमा अनावरण
10:45 बजे से 11:00 बजे तक

सार्वजनिक कार्यक्रम
11:00 बजे से 01:30 बजे तक

भोजन एवं शिवरात्रि व्रत फलाहार
दोपहर 01:45 बजे से

आप सपरिवार कार्यक्रम सादर आमन्त्रित हैं।

प्रो. भाग चन्द चौहान
अध्यक्ष

भूमिदत्त शर्मा
महासचिव

ठाकुर रामसिंह 111वीं जयन्ती समारोह

कलियुगाब्द 5127, विक्रमी संवत् 2082,
फाल्गुन प्रविष्टे 4 (15 फरवरी, 2026) रविवार

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान
गांव व डाकघर नेरी, तहसील व जिला हमीरपुर (हि.प्र.)
दूरभाष : 01972-262905, 94181-03488
E-Mail : ishodhsansthanneri@gmail.com

जीवन परिचय : ठाकुर रामसिंह

शोध संस्थान के संस्थापक एवं मार्गदर्शक ठाकुर रामसिंह का जन्म हमीरपुर जिला में झण्डवीं गांव में एक किसान परिवार में कलि. 5016, विक्रमी संवत् 1971, फाल्गुन प्रविष्टे 4 (16 फरवरी, 1915) को हुआ था। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा झण्डवीं में प्राप्त करने के पश्चात् उच्च शिक्षा हेतु लाहौर गए, जहां वह 1942 में इतिहास विषय में एम.ए. करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आए। एम.ए. इतिहास में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा उसी महाविद्यालय में आचार्य पद पर नियुक्ति प्रदान की गई, किन्तु उन्होंने इस पद को अस्वीकार करके अपना सम्पूर्ण जीवन समाज कार्य के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रचारक बनकर समर्पित कर दिया।

ठाकुर रामसिंह जी ने 1942 से 1988 तक संघ के प्रचारक के रुप में अनेक महत्वपूर्ण दायित्वों पर काम किया तथा सन् 1988 में उन्हें अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना का कार्य सौंपा गया। उन्होंने अनवरत परिश्रम कर देशभर के प्रत्येक जिला में इतिहास संकलन योजना की कार्यकारिणी का गठन किया और इतिहास के विद्वानों को भारतीय इतिहास परम्परा का ज्ञान करवाया। वह 1992 से 2000 तक इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष और तत्पश्चात् 2003 तक मार्गदर्शक का दायित्व निर्वहन करते रहे। ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान की स्थापना हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला केन्द्र से पश्चिम दिशा में स्थित नेरी गांव में आश्विन नवरात्र के प्रथम दिवस, शुक्ल प्रतिप्रदा, कलि. 5104, विक्रमी संवत 2059 ईस्वी, सन् 07 अक्तूबर, 2002 को माननीय ठाकुर रामसिंह जी के मार्गदर्शन में इतिहास एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के क्षेत्र में स्थायी कार्य हेतु शोध संस्थान की स्थापना हुई।

ठाकुर रामसिंह जी का यह दृढ़ विश्वास था कि इतिहास, कला और संस्कृति, किसी भी राष्ट्र की सामूहिक चेतना के आधारस्तंभ होते हैं। ये न केवल समाज की अस्मिता का निर्माण करते हैं, बल्कि अतीत के अनुभवों से वर्तमान को दिशा और भविष्य को प्रेरणा प्रदान करते हैं।

वह कहा करते थे कि शोध कार्य के लिए स्थाई व्यवस्था होना अति आवश्यक है, उसी दृष्टिगत शोध संस्थान की स्थापना हुई। शोध संस्थान का दिशा-निर्देश, कार्य पद्धति, सिद्धान्त आदि का सम्पूर्ण प्रारूप उन्होंने स्वयं तैयार किया। कलि. 5112, विक्रमी संवत् 2067, भाद्रपद कृष्ण 13 (6 सितम्बर, 2010) को 96 वर्ष की आयु में वह नश्वर शरीर को त्यागकर परमधाम चले गए।

उद्देश्य

1. मानव एवं प्रकृति का इतिहास तथा उसका कालक्रम
2. इतिहास संशोधन
3. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं वैज्ञानिक शोध
4. भारतीय कालक्रम
5. सामाजिक जागरण

वर्तमान गतिविधियां

1. विशेष शोध परियोजना : हिमाचल प्रदेश का बृहद इतिहास (छः खण्डों में)
2. राष्ट्रीय परिसंवाद : हिमाचल प्रदेश की सामाजिक संरचना : निरन्तरता एवं परिवर्तन
3. हिमाचल प्रदेश के राजवंशों का इतिहास
4. ऋग्वेद में वर्णित पश्चिमी हिमालय से सम्बन्धित वैदिक संदर्भ
5. पश्चिमी हिमालय में महाभारत के संदर्भ

प्रकाशन

(जयन्ती समारोह के उपलक्ष्य पर लोकार्पण)

1. हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत
2. हिमाचल प्रदेश के चयनित गांवों का इतिहास
3. ऋग्वेद में वर्णित पश्चिमी हिमालय से सम्बन्धित वैदिक संदर्भ
4. राजस्थान के वागड़ क्षेत्र का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास
5. Habitat, Society and Economy of Anushuchit Janjati of Northeast Bharat
6. Pastoralists, forests and Colonial ruke: a study of Gujjars of Himachal Pradesh